परिमार्जन/ संशोधन को सदा तत्पर .....आप भी आगम एवं स्वानुभव से प्रमाण कीजिए।

मो. मा. प्रका, ३४७ – कथन सूक्ष्म स्थूल होते हैं। .....मुख्य गौण होते हैं।

द्रव्य के परिचय का आधार जिनागम के आलोक में

त्रैकाल्यं द्रव्य-षटकं नव-पद-सहितं जीव षटकाय-लेश्या: |

पंचान्ये चास्तिकाया व्रत-समिति-गति-ज्ञान-चारित्र-भेदा: ||

इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवन-महितै: प्रोक्तमर्हदभिरीशै: |

प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान यः स वै शुद्ध-दृष्टि: ||

इसमें मोक्ष का मूल मार्ग अन्तरंग एवं बहिरंग पूर्णत: दर्शा दिया गया है | ऊपर दिए श्लोक में तत्त्व को पदार्थ में शामिल कर लिया गया है |

नीचे अन्तरंग मोक्षमार्ग के कारण रूप द्रव्यदृष्टि के लिए द्रव्य का ज्ञान कराया जा रहा है |

स्वचतुष्टयात्मक द्रव्य का परिचय

अंतर का आधार	*द्रव्य*	*पंचास्तिकाय*	*पदार्थ*	*तत्त्व*
१- प्रश्न का उत्तर	*अहं योग्य विषय किस द्रव्य में मिलेगा ?*	*अहं योग्य विषय किस क्षेत्र में मिलेगा ?*	*अहं योग्य विषय किस परिणमन में मिलेगा ?*	*अहं योग्य विषय ?*
२- परिभाषा	*अनंत गुणों का समूह*	*अनेक प्रदेशों का समूह*	*पद-संज्ञा को सार्थक करना/ परिणमना*	*पदार्थ का भाव*
३- परिचय	*जाति अपेक्षा*	*क्षेत्र अपेक्षा*	*काल अपेक्षा*	*भाव अपेक्षा*

४- प्रयोजन	द्रव्य सम्बन्धी भेद्विज्ञान, अन्य द्रव्यों से पृथक करना परन्तु अन्य जीव को अपने समान ही अनुभव करना	क्षेत्र सम्बन्धी भेद्विज्ञान, अनंत गुणों की सत्ता की आधार सिद्धि	काल सम्बन्धी भेद्विज्ञान, परिणमन / सार्थकता सिद्धि /	भाव सम्बन्धी भेद्विज्ञान, आश्रय योग्य पारिणामिक भाव खोजना
५- आधार ग्रन्थ मुख्यतः	पंचास्तिकाय जी १०३ तक की गाथा, द्रव्य संग्रह	पंचास्तिकाय जी	पंचास्तिकाय जी ४८ गाथा, अनेकों आध्यात्मिक ग्रन्थ	पंचा. दुसरे अ. की ४८ गाथा स.कलश ७ आदि अनेकों अ.ग्रन्थ
६- हेय-ज्ञेय-उपादेय	ज्ञेय	ज्ञेय	९ पदार्थ ज्ञेय, जानने में आता हुआ प्रयोजन वान – ससा.गाथा टीका १२ समयसार ७४-७५ जयसेन आ.की टीका आदि पुण्य पाप आदि ७ पदार्थ जीव पुद्गल के संयोग परिणामों से उत्पन्न हुए हैं / वे शुद्ध नय से जीव का स्वरूप नहीं हैं /	मात्र जीव निज शुद्धात्मा ही आश्रय योग्य उपादेय शेष हेय
७- संख्या	अनंत द्रव्य	पाँच अस्तिकाय	नौ पदार्थ	७ तत्त्व
८- नय	संग्रह - व्यवहार नय	संग्रह - व्यवहार नय	संग्रह - व्यवहार नय	व्यवहार नय
९- जीव अपेक्षा संख्या	अनंत	अनंत	अनंत	एक मात्र स्वयं निज शुद्धात्मा
१०- निमित्त उपादान	त्रिकाली उपादान	त्रिकाली उपादान	क्षणिक उपादान – तत्समय की योग्यता, परस्पर परिणमन में निमित्त-नैमेत्तिक /	त्रिकाली उपादान
११-चार अनुयोग	आगम सिद्धि	आगम सिद्धि	आगम सिद्धि, अध्यात्म सिद्धि	अध्यात्म सिद्धि
१२-	मैं ७ वा द्रव्य हूँ /	मैं ६ वा अस्तिकाय हूँ /	मैं १० वा पदार्थ हूँ /	मैं ८ वा तत्त्व

आनंदात्मक सत्य				धर्मदास –स्वात्मानुभवन
१३- स्वतन्त्रता	५ द्रव्य से असत, स्व द्रव्य से सत, स्यादवाद-सप्त भंग की सिद्धि /	पर क्षेत्र से असत, स्वक्षेत्र से सत, अनेकांत का आधार सिद्धि /	पर पदार्थ से असत, स्व पदार्थ से सत, स्यादवाद की सिद्धि	स्वभाव से सत, परभाव से असत, अस्ति नास्ति स्यादवाद की सिद्धि
१४- अभाव सिद्धि	अत्यन्ताभाव अन्योन्याभाव	अतद्भाव	प्रागभाव- प्रध्वंसाभाव अतद्भाव	अतद्भाव
१५- भूल का फल	द्रव्य परावर्तन	क्षेत्र परावर्तन	काल परावर्तन	भाव परावर्तन

भव रहित स्वचतुष्टयात्मक द्रव्य को भूलने का फल भव परावर्तन है /

तत्व से ही द्रव्य क्षेत्र काल-परिणमन तीनों सार्थक होते हैं /

समयसार गाथा ४१५ – जो आत्मा इस समय प्राभृत को पढ़कर अर्थ और तत्त्व से जानकर इसके विषयभूत अर्थ में स्वयं को स्थापित करेगा; वह उत्तम सुख को प्राप्त करेगा /

समयसार कलश टीका २७०-२७१ के बीच में समागत अंश – न द्रव्येन खंडयामि, न क्षेत्रेन खंडयामि, न कालेन खंडयामि, न भावेन खंडयामि /

नव तत्व गतत्वेपि यदेकत्वं न मुंचति /

पज्जय मूढा हि पर समय ....

सिद्ध समान सदा पद मेरो एवं अर्हन्त और मेरा आत्मा समान देखने में पदार्थ ही बाधक होती है तत्वतः समान ही भासित होते हैं / पदार्थ में केवलज्ञान एवं मतिज्ञान में अंतर होता ही है /

पर्याय-पदार्थ को लक्षण नहीं बनाया जा सकता है /

जैनेन्द्र सिद्धांत कोश में A-१५/ भाग ३ पर

पदार्थ का अर्थ-न्याय-विनिश्चय टीका १/७/१४०/११५ पद का अर्थ सो पदार्थ अर्थात सामान्य रूप से जो कुछ भी शब्द का ज्ञान है व शब्द का विषय है वह शब्द पदार्थ का वाच्य है |

सबसे बड़ा द्रव्य – द्रव्य संख्या अपेक्षा पुद्गल, क्षेत्र – आकाश, काल में सब समान, भाव अपेक्षा जीव सर्वाधिक ज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेद |- जैन दर्शन दीपिका पृष्ठ ८५ प्रश्न २१५

प्रवचनसार तात्पर्य वृत्ति टीका ९३ गाथा – इस विश्व में जो कुछ भी जानने में आने वाला पदार्थ है, वह सब द्रव्यमय, गुणमय, पर्यायमय है |

१- *शंका – पदार्थ एवं तत्त्व में क्या अंतर हैं ? एक जैसे दिखते हैं | मात्र पाप-पुण्य आस्रव होने पर भी उन्हें पृथक से कह दिया है |*

समाधान – पदार्थ में परिणमन की मुख्यता होने से जीव, अन्य ८ पदार्थ रूप परिणमित होने पर भी उनसे लाक्षणिक रूप से पृथक है | इतना ही नहीं; शाश्वत जीव का उनके साथ कर्ता-भोक्ता, एकत्व-ममत्व भी नहीं है | ये सभी जाने हुए प्रयोजनवान हैं | सत्तात्मक भिन्नता न होने से व्यवहार नय से कर्ता-भोक्ता, एकत्व-ममत्व आगम व्यवहार (दायित्व, श्रेय देने के लिए) साधने के लिए कहा जाता है | इन परिणामों से अभेद देखा-कहा जाए तो अशुद्ध, एकदेश, साक्षात शुद्ध निश्चय नय घटित होता है |

१- *शंका – जीव पदार्थ एवं जीव तत्त्व में क्या अंतर है ?*

समाधान - जीव पदार्थ में परिणमता हुआ ज्ञान दर्शन (पर्याय) लेना है | जबकि तत्त्व में सहज ज्ञान दर्शन से अभेद ध्रुव जीव (पारिणामिक भाव) लेना है | जीव द्रव्य में लक्षण रूप से ज्ञान-दर्शन लेना है; जबकि जीव तत्त्व में मात्र अपना ज्ञान-दर्शन-सुख मयी अभेद सत्ता लेना है |

पारिणामिक भाव के अपर नाम – नियमसार परम आलोचना अधिकार के कलश / गाथा

सर्वसंग विमुक्त, निर्मोह रूप, अनघ, परभाव मुक्त कलश १५८ , सुख सुधा सागर - कलश१५७

निर्मल चिन्मात्र – कलश १५९ , परम स्वभाव , विभाव स्वभाव अगोचर गाथा ११० , सर्व वंद्य, सकल गुण निधि- १५४ कलश, विमल गुण निलय , गाथा १११ , नय अनय ग्राम से दूर, चैतन्यमय सहज तत्व , १५६ पुराण, सनातन, त्रियोग अगोचर १५५ स्वात्म -१५३ कलश, निरुपाधिक -१५२ , आत्मा गाथा १०७ , सदा शुद्ध, ज्ञान शरीरी, अशरीरी- १६६ कलश, शुद्ध चैतन्य (पर्याय शून्य) १६७-कलश, अव्यय, अज, अमर -१६८ कलश, ज्ञानियों की दृष्टी में वस्य १७०- कलश, निरंजन निज परमात्म तत्व -१७२, सहज तत्व – अनाकुल, सुलभ, समता निलय, महिमावंत – १७६ , अंतर्निमग्न, निरावरण , शिव, कल्याणमय, स्पष्ट-स्पष्ट , नित्य पर्याय प्रपंच से परान्गमुख -१७७ कलश,

कलश.....में – अवक्तव्य/ वचनातीत

२- *शंका – अजीव पदार्थ एवं तत्त्व में अंतर क्या है ?*

समाधान – जो जीव जैसे नहीं परिणमते, वे अजीव हैं और जिसमें मेरे ज्ञान-दर्शन नहीं पाए जाते; वे अन्य समस्त जीव भी अजीव तत्त्व है | मेरे वर्तमान मोह आदि के कारण नहीं होने वाले, अजीव द्रव्य हैं और उनके कारण होने वाले, अजीव तत्त्व हैं |

३- *शंका – पाप पुण्य को तत्त्व में न लेने का कारण क्या है ?*

समाधान – तत्त्व का प्रयोजन आश्रय-अनाश्रय भूत का निर्णय करना है | अतः यह कार्य आस्रव बंध में ही हो जाने से पृथक से नहीं लिया गया है | दोनों बंध में समान एवं दृष्टी में समान रूप से हेय ही हैं | दोनों संसार में दाखिल कराने वाला होने से सुशील कैसे हो सकता है |

४- *शंका – पदार्थ में भी पाप-पुण्य को आस्रव में गर्भित न करने का कारण क्या है ?*

समाधान – मोक्षमार्ग प्रकाशक पृ – ३१७ "पाप को जानकर स्वछन्द प्रवर्तन न करें, और पुण्य को मोक्षमार्ग न माने |"

प्रव.सा.गाथा १२ की टीका – "पाप अत्यंत हेय है, जबकि पुण्य कथंचित उपादेय, कथंचित हेय है - इस अंतर को दिखाने के लिए सामान्य आस्रव से पृथक किया गया है।"

"कर्म भेद है – शुभ अशुभ, कारण भेद, स्वभाव भेद, अनुभव भेद, आश्रय भेद हैं।"- समयसार कलश टीका १०२ परन्तु आस्रव एवं बंध संसार बर्धन में समान ही हैं; अतीन्द्रिय आत्मीक आनंद से दोनों दूर ले जाते हैं। दोनों ही इन्द्रिय सुख-दुःख में निमित्त हैं।

पुण्य को मोक्ष का परम्परा कारण कहा अर्थात पुण्य का अभाव कारण एवं रत्नत्रय को सद्भाव कारण कहा है।

५- शंका – संवर-निर्जरा में पदार्थ एवं तत्त्वपने क्या अंतर है ?

समाधान - संवर-निर्जरा; एक देश प्रगट करने योग्य उपादेय हैं; परन्तु आश्रय योग्य हेय हैं। उपादेयता बताने के लिए पदार्थ एवं सादि-सांत होने से आश्रय योग्य हेयता दिखाने के लिए तत्त्व कहा है।

६- शंका – मोक्ष पदार्थ एवं मोक्ष तत्त्व में क्या अंतर है ?

समाधान – मोक्ष पदार्थ में अनंत अलौकिक सुख की सिद्धि करना है। जबकि तत्त्व में सादि-अनंत होने से वह आश्रय करने योग्य नहीं है। साक्षात् प्रगट करने योग्य उपादेय तो है; परन्तु उसके आश्रय से वह प्रगट नहीं होता है; अतः हेय ही है।

जीव तो अन्य तत्त्व के साथ एवं उनके अभाव में भी रह सकता है; क्योंकि वह तत्त्व है; अतः जीव मात्र ही त्रिकालीपने को सिद्ध होता होने से आश्रय योग्य है।

७- शंका – पदार्थ के दो भेद जीव-अजीव हैं तो इनके विशेष कौन-२ से होते हैं ?

समाधान – जीव - आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य, पाप।

अजीव - आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य, पाप। अतः स्वतः सिद्ध ही है कि यहाँ निमित्त नैमित्तिक भाव की मुख्यता है। तत्त्व में जीव तत्त्व में निमित्त नैमित्तिक भाव न होने से आश्रयभूत है, जीव पदार्थ नहीं। जीव पदार्थ में कर्मोपाधि सापेक्ष भाव लिए जायेगे।

८- शंका – कर्म सापेक्ष भाव को पदार्थ कहेंगे तो कर्म को कर्ता क्यों न मानेंगे ?

समाधान – कर्म के उदय में विकार होता है; परन्तु कर्म के कारण नहीं। समयसार जी कलश १७५....'पर-संग एव...' पर से नहीं, परसंग से बंध होता है। स्वयं का विकार निमित्त कहलाता है और उसके निमित्त से द्रव्य आस्रव बंध होता है; अतः उदय एवं बंध के कारण आत्मा में विकार नहीं होता है। कर्म के उदय प्रमाण बंध होता तो मोक्ष कभी सम्भव न हो सकेगा। ऐसा कहीं भी नहीं लिखा है कि कर्म के उदय में इतना बंध होता ही है। हां ! बंध की जितनी योग्यता जीव में होती है वह मिथ्यात्व आदि गुणस्थान प्रमाण बंध को प्राप्त होता है;

उस समय कर्म का उदय अवश्य होता है | ऐसा भी होता है कि कर्म का उदय कुछ और हो और बंध कुछ और | प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभाग का अंतर उदय एवं बंध में देखा जा सकता है |-जयसेन आ. प्रवचन सार ४३ की टीका | १० वे गुणस्थान में सूक्ष्म लोभ होने पर भी बंध नहीं होता है | यह स्वतन्त्रता है | विकार-अनुसार बंध होता भी है और नहीं भी |

९- शंका- कर्मों के उपशमादि से संवर-निर्जरा, मोक्ष होता है क्या ?

समाधान – नहीं; क्योंकि जीव स्वयं पुरुषार्थ से संवर, निर्जरा, मोक्ष रूप परिणमता है; तब नैमित्तिक रूप से द्रव्य संवर-निर्जरा-मोक्ष कहने में आते हैं | उनके उपशम-क्षयोपशम-क्षय के प्रभाव-निमित्त से आत्मा में कुछ नहीं होता है |

१०- शंका – सर्वत्र जीव पदार्थ एवं जीव तत्त्व में अंतर की भाषा ही बोली जाती है क्या ?

समाधान – नहीं; एक दूसरे में गौण करके भी कथन ग्रंथों में सम्भव है; क्योंकि दोनों एक दूसरे के निकट भाव वाले हैं | तत्त्व में आश्रय भूत जीव तत्त्व की खोज की जाती वस इतना सा अंतर है; अन्य तत्त्व का भाव सुख रूप दुःख रूप पाया जाना(स्वरूप) ही तो उन्हें पदार्थ साबित करता है | एक ही रूप में कथन करते-सुनते समय भी स्वभावगत अंतर ध्यान में रखना चाहिए | इसीलिए समाज में सात तत्त्व की पढ़ाई तो होती दिखती है; परन्तु नौ पदार्थ नाम का पाठ पृथक से लिखने-पढने में नहीं दिखता है |

११- शंका – शास्त्र में सब कुछ स्पष्ट क्यों नहीं लिखा मिलता ? पढ़ कर निर्णय करने में बड़ी उलझन एवं मत विविधता हो जाती है |

समाधान – भाषा की इसी मजबूरी के कारण ही तो 'स्यात अवक्तव्य' भंग है | भाषा का अर्थ करते समय हमें व्याकरण, धार्मिक कथन परम्परा (चार अनुयोग), अर्थ करने की ५ प्रकार की पद्धतियों का भी ध्यान रखना पडता है | पूर्वापर मिलान किये बिना विश्व में भाषा का अर्थ कभी नहीं किया जा सकता है | इसीलिए तो एकान्तवाद पुष्ट हो जाता है |

१२- शंका – द्रव्य को द्रव्य तरीके से जानने की क्या आवश्यकता है ?

समाधान – कार्य होते समय छहों द्रव्य कार्य करते हैं; वहां जीव को ५द्रव्यों-देहादि से भिन्न पहचानने के लिए जीव जाती को द्रव्य से जानना चाहिए | सुख-ज्ञान-दर्शन आदि शरीर, धन आदि में नहीं हैं | देह की क्रिया में भी नहीं हैं | अन्य जीव भी मेरी तरह जीव है | इससे चरणानुयोग-अहिंसा, विश्व-बन्धुत्व की सिद्धि होती है |

१३- शंका – उत्कर्षण, अपकर्षण, तीव्र उदय- उदीरणा तो जीव को प्रभावित करते हैं ?

समाधान – कर्म के दश करण में मात्र जीव के लेश्या-मिथ्यात्व परिणाम निमित्त होते हैं | कर्म की तरफ से जीव पर कोई असर नहीं पड़ता है | कथन शैली की पराधीनता या प्रसिद्धि के कारण भ्रम हो जाता है | किसी भी दशा में जीव पराधीन होकर नहीं परिणमता है |

१४- शंका – औपचारिक सत्य क्या होता है ?

समाधान – पर द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव सापेक्ष कथन - यह औपचारिक सत्य कथन कहलाते हैं |

जैनेन्द्र सिद्धांत कोश पृष्ठ २११ - जिन्हें विविध गुणों एवं पर्यायों के साथ अपनत्व हैं, वे अस्तिकाय हैं; की जिनसे तीनों लोक निष्पन्न हैं - प.का.गाथा ५

अणु को भी पूर्वोत्तर प्रज्ञापन नय से कायत्व है | पं.का.गाथा ४ ता.वृत्ति टीका

नियमसार ता.वृत्ति ३४, वहुप्रदेशी होने से अस्ति काय हैं | -द्रव्य संग्रह गाथा २३

प्रयोजन – प्र.सा.१३६/१९२/१० , स्व शुद्ध जीवास्तिकाय ही उपादेय है; शेष सब हेय हैं |- द्रव्य संग्रह टीका ५६/२२०/९ , प.का.४ ता वृत्ति एवं १०३ – इसके सार को जानकार जो राग द्वेष को छोड़ता है, वह मोक्ष को पाता है |